इतिहास दिवाकर

त्रैमासिक अनुसंधान पत्रिका

वर्ष ११ अंक ३ आश्विन मास कलियुगाब्द ५१२० अक्तूबर २०१८

भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी

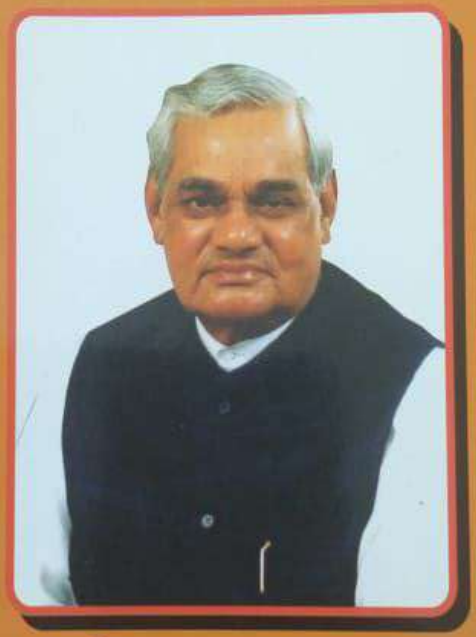

२५ दिसम्बर, १९२४ – १६ अगस्त, २०१८

ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान चेरी

गांव व डाकघर चेरी, जिला हमीरपुर-177001 (हि॰ प्र॰)

इतिहास दिवाकर

त्रैमासिक अनुसंधान पत्रिका

वर्ष ११ अंक ३ आश्विन मास कलियुगाब्द ५१२० अक्तूबर २०१८

मार्गदर्शक :
डॉ० शिवाजी सिंह
इरविन खन्ना
चेतराम गर्ग

सम्पादक :
डॉ. राकेश कुमार शर्मा

सह सम्पादक
डॉ. विवेक शर्मा

व्यवस्थापक
प्यार चन्द परमार

सम्पादन सहयोग :
डॉ० रमेश शर्मा
डॉ० ओम प्रकाश शर्मा

टंकण एवं सज्जा :
रवि ठाकुर

सम्पादकीय कार्यालय :
ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान,
नेरी, गांव व डाकघर - नेरी
जिला-हमीरपुर-१७७००१(हि०प्र०)
दूरभाष : ०६४१८४-८५४१५

मूल्य:
प्रति अंक - १५.०० रुपये
वार्षिक - ६०.०० रुपये
itihasdivakar@yahoo.com
chetramneri@gmail.com

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय

उद्‌बोधन
भारत सांस्कृतिक राष्ट्र है — डॉ. मोहन राव भागवत — ३

संवीक्षण
मनु और मनाली की ऐतिहासिकता :
एक वैज्ञानिक अवलोकन — डॉ. भाग चन्द चौहान — १३

अटल जी की जीवन यात्रा — डॉ. इन्द्र सिंह ठाकुर — २५

अटल जी का संघ सम्बन्ध एवं
राष्ट्र चिन्तन — ऋषि कुमार — ३४

भागवतपुराण कालीन इतिहास — डॉ. कृष्ण मोहन पाण्डेय — ४२

ध्येय-पथ
गतिविधियां — प्यार चन्द परमार — ४८

संवीक्षण

मनु और मनाली की ऐतिहासिकता : एक वैज्ञानिक अवलोकन

डॉ. भाग चन्द चौहान

Vedic Cosmology is the only one in which the time scales correspond to those of modern scientific cosmology. Vedic Cosmology is yet another ancient Vedic science which can be confirmed by modern scientific findings. ..... the cosmology of the Vedas closely parallels modern scientific findings.

- Carl Sagan, British Cosmologist

प्रस्तावना

भारतीय काल-गणना और आधुनिक विज्ञान की काल-गणना में आश्चर्यजनक रूप से मेल होना, जिसे प्रो. कार्ल सागन अपनी पुस्तक 'कोरमोंस' में प्रस्तुत करते हैं, भारतीय ऋषियों की अद्‌भुत प्रज्ञा, मेधा और मानसिक पराकाष्ठा का परिचायक है। मन्त्रद्रष्टा ऋषि समाधिस्थ होकर उस परब्रह्म से दिव्य साक्षात्कार कर वेद-मन्त्रों को रचता है। रुचिकर बात तो यह है कि इन वेद-मन्त्रों के गूढ़ रहस्यों को विभिन्न कालखंडों में अनेकों ऋषियों द्वारा लोक रुचि और क्षमता के अनुसार दर्शनों, पुराणों, स्मृतिओं और अनेकों शास्त्र ग्रन्थों में विस्तारपूर्वक प्रस्तुत किया गया है। चार वेदों में ऋग्वेद आज निर्विवाद सम्पूर्ण विश्व में सबसे प्राचीन उपलब्ध लिखित ग्रन्थ माना जाता है। ब्रह्माण्ड की रचना के बारे में ऋग्वेद में कई सूत्र हैं, जिसमें हिरण्यगर्भ, नासदीय और पुरुष सूक्त के सूत्र सृष्टि की रचना के उस सत्य को व्यक्त करते हैं। ऋग्वेद के सूत्र १०/१९०/१-३ के अनुसार

ऋतं च सत्यं चाभीद्धात् तपसोऽध्यजायत।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः।।१।।
समुद्रा दर्णवादधि संवत्सरो अजायत।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी।।२।।
सूर्या चन्द्रमसौ धाता यथापूर्वम कल्पयत्।
दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।।३।।

भाव यह है कि परमेश्वर के दीप्तिमान तप से ऋत और सत्य उत्पन्न हुए। उससे आकाश उत्पन्न हुआ। आकाश से संवत्सर उत्पन्न हुआ। परमेश्वर ने दिन और रात बनाये, सूरज और चांद बनायें यह सब उसने पूर्वकल्प के अनुसार बनाए। पृथ्वी, अन्तरिक्ष और द्युलोकों को भी बनाया। इन सब का वैज्ञानिक अर्थ निकाला जाये तो सबसे पहले कुछ भी नहीं था, प्रकृति के नियम (ऋत और सत्य) बनें। फिर स्पेस-टाइम (आकाश) का निर्माण हुआ तो उस आकाश में सूरज, चांद, सितारे और